अध्याय– द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ

2.3 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

2.4 शोध से संबंधित कार्य

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका –

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो शोधकार्य के अन्तर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है। क्योंकि यह समस्या की पुरी तस्वीर उभारने में मद्द करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को, अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूप रेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा, इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जबतक शोधकर्ता को ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस प्रविधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ –

1. गुड़, बार तथा स्केट्स के अनुसारः–''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधित आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले

तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनार्थ खोजो से परिचित होना आवश्यक है।''

2. चार्टर वी. गुड़ के अनुसार – ''मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी, अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्त्रोत का द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण अध्ययन की विधि का चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करता है। वास्तव में रचनात्मकता मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गंभीर रचना आवश्यक हैं।''

2.3 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ –

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान कि वर्तमान सीमा कहां पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतरदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का ज्ञान होता है।
5. संबंधित साहित्य की समीक्षा करने का अंतिम व महत्वपूर्ण विशेष कारण यह जानना भी है कि पिछले अनुसंधायक ने

अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुशंसाऐं की थी।

2.4 शोध से संबंधित कार्य –

1. **सिंग और मोहन जी (1996)** ने नौकरी की चिन्ता और नौकरी का स्तर पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य नौकरी का स्तर और नौकरी की चिन्ता के बीच प्रभावी भूमिका संबंध का अध्ययन करना है। इसमें 100 मैनेजर और 100 सुपरवाइजर भिलाई के रिफेक्टोरिश प्लाट में कार्यरत् लोगों पर किया गया।

   इस अध्ययन के लिए भूमिका प्रभावी स्केल पारिख और नौकरी चिन्ता स्केल जिस पर भिलाई रिफलेक्टारिश में कार्यरत् 200 कर्मचारियों पर न्यादर्श लिया गया।

   इस अध्ययन के मुख्य परिणाम नकारात्मक पाया गया कि इस अध्ययन ने भूमिका प्रभावी और नौकरी की चिन्ता के बीच नकारात्मक संबंध पाया गया। कर्मचारियों में मैनेजर को उनके प्रभावी भूमिका की चिन्ता सुपरवाइजर की तुलना में अधिक पाया गया। अतः परिणाम मिला की नौकरी की चिन्ता और नौकरी के स्तर दोनों प्रभावी भूमिका को प्रभावित करता है।

2. **अन्सारी (M.A. Ansari, 1972)** ने स्कूल के विद्यार्थियों और कॉलेज के विद्यार्थियों की चिन्ता पर अध्ययन किया। अध्ययन का उददेश्य यह था कि स्कूल के विद्यार्थियों और कॉलेज के विद्यार्थियों की चिन्ता में अंतर का अध्ययन करना। इस अध्ययन में पाया कि स्कूल के विद्यार्थियों और कॉलेज के विद्यार्थियों की चिन्ता में महत्वपूर्ण और सार्थक अंतर होता है।

3. **Nijhawan 1971, Sharma & Gandhi (1971)** ने लड़के एवं लड़कियों की चिन्ता पर अध्ययन किया। अध्ययन का उददे्श्य लड़के एवं लड़कियों की चिन्ता में अंतर होता या नहीं यह जानना था। इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि लड़के एवं लड़कियों की चिन्ता के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर होता है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियोंमें चिन्ता का स्तर अधिक होता है।

4. **Spence, Kieffer & Tennyson (1973)** ने एक अध्ययन में यह देखा कि, Task oriented स्थितियों में उच्च चिन्ता वाले प्रयोज्यों का निष्पादन अच्छा होता है। साधारणतः कम चिन्ता वाले प्रयोज्यों का निष्पादन उच्च चिन्ता वाले प्रयोज्यों की अपेक्षा अधिक होता है।

5. **Paulson (1970)** ने एक अध्ययन में देखा कि पुनः स्मरण या स्मृति संबंधी कार्यो में उच्च चिन्ता वाले प्रयोज्यों की अपेक्षा निम्न चिन्ता वाले प्रयोज्यों का निष्पादन श्रेष्ठ रहता है।

6. **Sharma (1970)** ने एक अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि जिन छात्रों में चिन्ता की मात्रा उच्च थी इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर मध्यम है तथा जिन छात्रों में चिन्ता की मात्रा निम्न थी, इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी मध्यम है।

7. **A. Hazari (1970)** ने एक अध्ययन में यह देखा कि अधिक चिन्ता की अवस्था में वातावरण के उद्दीपकों पर ध्यान केन्द्रित करने में प्रयोज्य को कठिनाई होती है।

8. **N.K. Dutt (1968)** ने एक अध्ययन में यह देखा कि चिन्ता का संबंध आयु और सामाजिक आर्थिक स्तर से है।

9. **B.N. Singh (1966)** ने चिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध जानने के लिये एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह देखा गया कि, चिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है।

10. **G.P. Thakur (1970)** ने बुद्धि और चिन्ता का सहसंबंध के बारे में अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया कि, चिन्ता और बुद्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है।

11. **Sinha & Singh (1958)** ने एक अध्ययन में यह देखा गया कि उच्च चिन्ता जटिल कार्यो में निष्पादन का निर्धारण करती है।

12. **Sharma (1964)** ने चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध के बारे में अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया कि, चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ तथा धनात्मक संबंध है।

13. **D.N. Srivastava (1975)** ने एक अध्ययन में यह देखा कि, निम्न स्तर की चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक संबंध है तथा इस प्रकार की चिन्ता अभिप्रेरणा का कार्य करती हैं, दूसरी ओर उच्च चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि से ऋणात्मक संबंध है तथा इस प्रकार की चिन्ता कुसमायोजन उत्पन्न करता है।

14. **Chaturvedi S.C.(1981)** ने एक अध्ययन में यह देखा कि चरण तथा गुण चिन्ता अवस्था व कार्य क्षेत्र में आत्मनिर्भता का

प्रभाव जो कि ज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि शिक्षक की विशेषताओं का मापन जो कि दो विभिन्न गुणों से संबंधित है। इस अध्ययन में यह पाया कि–

1. वह सभी शिक्षक जो अपने क्षेत्र में आत्मनिर्भर है वह अच्छा निष्पादन कर पाते है, उन शिक्षकों से जो कि क्षेत्र पर आश्रित है। यह ज्ञानात्मक क्षेत्र के मापन पर आधारित है।
2. जिन शिक्षकों में कम चिन्ता है वह अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य निष्पादन कर पाते है। उन शिक्षकों से जो कि अधिक चिन्तित रहते हैं यह भी ज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित है।

15. **C, Mohanty (1985) ने** प्रारंभिक शालाओं के विद्यार्थियों पर चरण– गुण चिन्ता (State-Trait anxiety) का कक्षा अधिगम एवं आत्म समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की चिन्ता और उनके समायोजन एवं बुद्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना यह था।

इस अध्ययन में यह पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं चरण चिन्ता में नकारात्मक सहसंबंध है।